PHILOSOPHY (HONOURS)

E. STUDY MATERIAL
FOR B.A. PART-I

BY:- DR. RAKESH KUMAR SINGH
G.D. COLLEGE, BAGAHA
Mob. 9576936617

वैशेषिक दर्शन में पदार्थ के रूप में गुण :-

गुण को वैशेषिक दर्शन में दूसरे स्थान पर रखा गया है गुण द्रव्य में निवास करता है। इसलिए गुण को अकेला नहीं पाया जा सकता। द्रव्य का गुण होता है किन्तु गुण का गुण नहीं होता है। गुण कर्म से भी शून्य है। अतः वैशेषिक दर्शन के अनुसार "गुण वह पदार्थ है जो द्रव्य में रहता है परन्तु जिसमें गुण और कर्म नहीं रहते" इस परिभाषा का विश्लेषण करने पर गुण की निम्न सामान्य विशेषताएँ स्पष्ट होती है।

(1) गुण द्रव्य में ही रहते हैं। द्रव्य को अपने अस्तित्व के लिए किसी अन्य सत्ता पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। किन्तु गुण अपने अस्तित्व के लिए द्रव्य पर निर्भर है। गुण किसी वस्तु का ~~अस्तित्व~~ स्वरूप निर्धारित करता है न कि उसका अस्तित्व।

(2) जो गुण से शून्य है। गुण निर्गुण होते हैं। यदि गुण में गुण मान लिया जाय तो इनसे दो कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती है। (1) यदि एक गुण में दूसरा गुण तो दूसरे में तीसरा, तीसरे में चौथा इस तरह श्रृंखला के अनन्त होने से अनवस्थादोष हो जाता है। (2) यदि एक गुण में दूसरे गुण को मान लिया जाय तो इन दोनों गुणों के दो प्रकार के स्वरूप हो जाएँगे। साथ ही यदि गुण गुण में भी रहने लगे तो ये दोनों गुण दो प्रकार के हो जाएंगे जिससे कठिनाई बढ़ जाएगी।

(3) गुण में कर्म नहीं होता है। कर्म के लिए गति की आवश्यकता पड़ती है। गुण स्थावर या गतिहीन है। इसलिए इनके स्थान-परिवर्तन का कोई प्रश्न नहीं उठता। इनसे कोई कर्म भी नहीं हो सकता।

(4) गुण द्रव्य एवं कर्म से सर्वथा भिन्न है। द्रव्य गुण का आधार है। इसलिए गुण को द्रव्य नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार गुण में गति का अभाव होने से उसमें कर्म नहीं रह सकते। अतः गुण कर्म से भी भिन्न है।